अलग - अलग इतिहास लेखन में दो अलग - अलग तरह की अर्थव्यवस्थाओं के प्रभाव की दो अलग - 2 उत्तर दिये गये है, परन्तु ये उत्तर आकड़ो - तथ्यो के आधार पर नहीं, वरन् अपनी आन्तरिक प्रतिबद्धताओ के आधार पर दिये गये है।

राष्ट्रवादी इतिहासकारो ने इस तथ्य को स्थापित किया है कि उपनिवेशवाद के अन्दर या औपनिवेशिक प्रशासन की स्थापना के बाद पूर्व पूँजीवादी उत्पादन प्रणाली एवं रिश्ते पूर्ववत बने रहें। अर्थात भारतीय अर्थव्यवस्था का तबतक आधुनिकिकरण नही हो सकता था जबतक उपनिवेशवाद को उखाड़ फेका नहीं जाता अर्थात उपनिवेशवाद एक अतिरचना (super structure) है। विदेशी सत्ता की स्थापना ही भारत की दुरावस्था का कारण है। कुल मिलाकर उपनिवेशवाद को विदेशी शासन के रूप में स्पष्ट करने की चेष्टा की गई। इसका कोई आर्थिक एवं सांस्कृतिक महत्व नहीं है।

किन्तु, प्रश्न उठता है कि क्या उपनिवेशवाद केवल विदेशी सत्ता (संप्रभुता) की स्थापना भर है। अगर चीन के उदाहरण को देखे तो वहां सत्ता देशी रही किन्तु चीन का औपनिवेशिक शोषण हुआ। प्रत्येक साम्राज्यवादी देश ने चीनी तरबुजे की छोटी-बड़ी फाके प्राप्त करने में सफलता पायी। स्वाभाविक रूप से उपनिवेशवाद केवल विदेशी सत्ता भर नहीं है।

⇒ उपनिवेशवाद राजनैतिक वर्चस्व से अधिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक वर्चस्व है

⇒ यह शोषण की वह प्रविधि है जो केन्द्र व परिधि सम्बन्धों (core - satellite relation) पर आधारित है। यहाँ संसाधनों का प्रवाह परिधि से केन्द्र की तरफ या उपनिवेश से साम्राज्य की तरफ होता है।

अतः परम्परागत विश्लेषण में यह कहना कि उपनिवेशवाद एक राजनैतिक सत्ता या विदेशी शासन है आंशिक सच है,

दूसरी तरफ, साम्राज्यवादी लेखन में यह कहा गया कि तथाकथित औपनिवेशिक शासन की स्थापना से पहले भारत एक अंधकार युग से गुजर रहा था। कारण;